भूमंडलीकरण के दौर में आदिवासी जीवन का यथार्थ

मनोज कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जैन विश्वविद्यालय बेंगलुरु.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18784203

ABSTRACT:

भारत तीसरी दुनिया का देश है। यहाँ अभी बहुत-सी जनसंख्या तमाम अभाव में जीवन गुजर-बसर करती है। अधिकतर जंगलों में रहने वाले जिन्हें हम 'जनजातीय लोग' के नाम से जानते हैं। भारत देश में कई राज्यों में आदिवासी पाए जाते हैं। उन राज्यों में प्रमुख हैं– उड़ीसा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, बिहार, झारखंड, केरल, पश्चिम बंगाल में ये अल्पसंख्यक हैं, जबकि भारतीय पूर्वोत्तर राज्यों में यह बहुसंख्यक हैं जैसे– मिजोरम राज्य। आदिवासी के लिए जल, जंगल तथा जमीन ही सब कुछ है। इनके लिए ये सब जीवन जीने के आधार हैं। इनका अपना पर्व और उत्सव होता है और इनका अपना कुल देवता होता है, जिसकी ये लोग पूजा करते हैं। कुल देवता की पूजा का विधि-विधान अलग-अलग आदिवासियों का अलग-अलग होता है। भारत में इनकी कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत (10 करोड़) जितना एक बड़ा हिस्सा आदिवासी का है।

भारत में 10 करोड़ जनसंख्या आदिवासियों की है। भारत ने संवैधानिक तौर पर 1991 से भूमंडलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की नीतियों को अपनाया है। तब से भूमंडलीकरण ने सबसे ज्यादा आदिवासियों को नुकसान पहुंचाया है। उनके रहन-सहन, उनकी संस्कृति और सभ्यता के नष्ट होने के पीछे उपनिवेशवाद और औद्योगिकीकरण है जोकि भूमंडलीकरण के अभिन्न अंग हैं। आदिवासियों को विभिन्न प्रकार के लुभावने लालच दिखा कर उनसे उनकी जमीन हथिया लेना, उस जमीन से कीमती वृक्ष, भू-खनिज पदार्थ निकाल कर खंडहरों में तब्दील कर देना और उसे उसी अवस्था में छोड़कर चला जाना कोई नई बात नहीं है। जिसके चलते आदिवासियों का जीवन नरक में तब्दील हो जाता है। प्रगति के नाम पर सरकार का एक फैसला उनके जीवन को तबाह कर देता है।

KEYWORDS:

भूमंडलीकरण, आदिवासी, जंगल, जीवन, यथार्थ आदि।

भूमंडलीकरण

भूमंडलीकरण, जिसे वैश्वीकरण भी कहा जाता है, एक ऐसी प्रक्रिया है जिसने विश्व को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय स्तर पर एक-दूसरे से जोड़ दिया है। यह प्रक्रिया, जो मुख्य रूप से 20वीं सदी के अंत और 21वीं सदी की शुरुआत में तेज हुई, ने वैश्विक व्यापार, संचार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया। हालांकि, इसके प्रभाव सभी समुदायों पर एकसमान नहीं रहे हैं। भारत जैसे देश में, जहाँ आदिवासी समुदाय देश की कुल जनसंख्या का लगभग 8.6% (2011 की जनगणना के अनुसार) हैं, भूमंडलीकरण ने उनके जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। आदिवासी समुदाय, जो अपनी अनूठी संस्कृति, परंपराओं और प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव के लिए जाने जाते हैं, भूमंडलीकरण के दौर में कई चुनौतियों और परिवर्तनों का सामना कर रहे हैं। यह शोध आलेख भूमंडलीकरण के संदर्भ में आदिवासी जीवन के यथार्थ को समझने का प्रयास करता है, जिसमें उनकी संस्कृति, अर्थव्यवस्था, सामाजिक ढांचे और पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण शामिल है।

भूमंडलीकरण के दौर में आदिवासी जीवन का यथार्थ

आदिवासी अधिकतर जंगलों, पहाड़ों पर निवास करते हैं। इसीलिए महात्मा गांधी ने इन्हें 'गिरिजन' नाम दिया था, यानी पहाड़ों पर वास करने वाले। जंगलों में विभिन्न प्रकार की उपयोगी सामग्री प्राप्त होती है। इसलिए आदिवासियों को हटवा कर वहाँ की उपयोगी सामग्री जैसे- अयस्क, कोयला, लकड़ी आदि का खनन करके उसका लाभ लेते हैं। लेकिन इस सब की वजह से आदिवासियों का जीवन बिखर जाता है। उन्हें तरह-तरह की यातनाएं सहनी पड़ती हैं। आदिवासी अपनी मौलिक पहचान खो बैठते हैं। इसके कारण उनकी प्रजाति का लोप हो जाता है। ऐसे ही बहुत-सी जनजातियाँ विलुप्त हो गईं और विलुप्त होने के कगार पर हैं। इनके बचाव के लिए साहित्यकारों ने साहित्य का सहारा लिया और इनकी आवाज की गूंज पूरे भारत क्या विदेशों तक पहुँचाई। जैसे- संजीव का उपन्यास 'फांस', 'धार'; रणेन्द्र का उपन्यास 'ग्लोबल गाँव का देवता'; वीरेंद्र जैन का 'डूब', 'पार'; हरीराम मीणा का काव्य संकलन 'हाँ चाँद मेरा है', 'सुबह के इंतजार में' आदि। आदिवासी अपनी आदिवासीयत के लिए जाने जाते हैं। भूमंडलीकरण इनकी आदिवासीयत को छीन रहा है, जो इनकी पहचान है, इनकी अस्मिता है। भूमंडलीकरण इनकी अस्मिता को नष्ट कर रहा है।

प्रस्तावना: आदिवासी जीवन और उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता

भारत में आदिवासी समुदाय, जैसे संथाल, गोंड, भील, मुंडा, और ओरांव, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्रकृति-केंद्रित जीवनशैली के लिए जाने जाते हैं। ये समुदाय मुख्य रूप से वन क्षेत्रों, पहाड़ी इलाकों और ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं। उनकी जीवनशैली प्रकृति के साथ सामंजस्य पर आधारित है, जहाँ वन, नदियाँ और भूमि उनके जीवन का आधार हैं। आदिवासी संस्कृति में सामूहिकता, मौखिक परंपराएँ, लोक नृत्य, संगीत और प्रकृति पूजा जैसे तत्व प्रमुख हैं। उनकी अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि, वन उत्पादों और हस्तशिल्प पर निर्भर है।

हालांकि, भूमंडलीकरण ने इन समुदायों के सामने नई चुनौतियाँ और अवसर प्रस्तुत किए हैं। वैश्विक बाजार, तकनीकी प्रगति और शहरीकरण ने आदिवासी जीवन को कई स्तरों पर प्रभावित किया है। एक ओर, जहाँ कुछ आदिवासी समुदायों को शिक्षा और रोजगार के नए अवसर मिले हैं, वहीं दूसरी ओर उनकी सांस्कृतिक पहचान, पर्यावरण और पारंपरिक आजीविका खतरे में पड़ गई है।

भूमंडलीकरण का आदिवासी जीवन पर प्रभाव

1. सांस्कृतिक प्रभाव:

भूमंडलीकरण ने आदिवासी संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। वैश्विक मीडिया, पश्चिमी जीवनशैली और शहरी संस्कृति का प्रभाव आदिवासी समुदायों तक पहुँच रहा है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी पारंपरिक प्रथाएँ और भाषाएँ लुप्त होने के कगार पर हैं। उदाहरण के लिए, कई आदिवासी युवा अपनी मातृभाषा के बजाय हिंदी या अंग्रेजी जैसी मुख्यधारा की भाषाएँ अपनाने लगे हैं। उनकी पारंपरिक लोक कथाएँ, गीत और नृत्य धीरे-धीरे विस्मृत हो रहे हैं, क्योंकि वैश्विक मनोरंजन के साधन, जैसे टेलीविजन और इंटरनेट, उनके जीवन का हिस्सा बन गए हैं। इसके अतिरिक्त, धार्मिक और सांस्कृतिक एकीकरण की प्रक्रिया ने कई आदिवासी समुदायों को मुख्यधारा के धर्मों की ओर आकर्षित किया है। उदाहरण के लिए, ईसाई मिशनरियों और हिंदू संगठनों ने कई आदिवासी क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति बढ़ाई है, जिससे उनकी प्रकृति-पूजा और अन्य पारंपरिक विश्वास प्रणालियाँ कमजोर हुई हैं। यह सांस्कृतिक परिवर्तन आदिवासियों की पहचान को धूमिल कर रहा है।

2. आर्थिक प्रभाव:

भूमंडलीकरण ने आदिवासी समुदायों की पारंपरिक अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित किया है। वैश्विक बाजार और औद्योगीकरण ने आदिवासी क्षेत्रों में खनन, बांध निर्माण और अन्य बड़े पैमाने की परियोजनाओं को बढ़ावा दिया है। इन परियोजनाओं के कारण आदिवासियों को उनकी पुश्तैनी जमीनों से विस्थापित होना पड़ा है। उदाहरण के लिए, झारखंड, छत्तीसगढ़ और ओडिशा जैसे राज्यों में खनन गतिविधियों ने लाखों आदिवासियों को उनके घरों और आजीविका से वंचित कर दिया है। वैश्विक बाजार में वन उत्पादों की मांग बढ़ने के बावजूद, आदिवासियों को इसका उचित लाभ नहीं मिल पा रहा है। मध्यस्थ और बड़े व्यापारी इन उत्पादों का लाभ उठाते हैं, जबकि आदिवासियों को न्यूनतम मजदूरी या लाभ मिलता है। इसके अलावा, आधुनिक कृषि तकनीकों और नकदी फसलों ने उनकी पारंपरिक कृषि पद्धतियों को प्रभावित किया है, जिसके कारण उनकी खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ गई है। हालांकि, कुछ मामलों में, भूमंडलीकरण ने आदिवासियों के लिए नए आर्थिक अवसर भी प्रदान किए हैं। उदाहरण के लिए, आदिवासी हस्तशिल्प और कला को वैश्विक बाजार में पहचान मिली है। गोंड और वारली चित्रकला जैसे कला रूप अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हो रहे हैं। फिर भी, इन अवसरों का लाभ केवल कुछ सीमित समुदायों तक ही पहुँच पाया है।

3. सामाजिक प्रभाव:

भूमंडलीकरण ने आदिवासी समुदायों के सामाजिक ढांचे को भी प्रभावित किया है। शहरीकरण और आधुनिकीकरण के कारण कई आदिवासी युवा अपने गाँवों को छोड़कर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। इस पलायन ने उनके सामुदायिक जीवन और पारिवारिक संरचना को कमजोर किया है। शहरों में, ये युवा अक्सर निम्न-स्तरीय नौकरियों में काम करते हैं और सामाजिक भेदभाव का सामना करते हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षा और तकनीकी प्रगति ने आदिवासी समुदायों में एक नई पीढ़ी को जन्म दिया है जो अपनी पारंपरिक जीवनशैली से कट रही है। यह पीढ़ीगत अंतर आदिवासी समुदायों के भीतर तनाव का कारण बन रहा है, क्योंकि पुरानी पीढ़ी अपनी परंपराओं को संरक्षित करना चाहती है, जबकि युवा पीढ़ी आधुनिकता को अपनाने की ओर अग्रसर है।

4. पर्यावरणीय प्रभाव:

आदिवासी जीवन प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव पर आधारित है।

उनके लिए जंगल, नदियाँ और पहाड़ न केवल आजीविका के साधन हैं, बल्कि उनकी संस्कृति और आध्यात्मिकता का हिस्सा भी हैं। हालांकि, भूमंडलीकरण ने पर्यावरणीय विनाश को बढ़ावा दिया है। बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण, खनन और वनों की कटाई ने आदिवासी क्षेत्रों में पर्यावरणीय संतुलन को बिगाड़ दिया है। उदाहरण के लिए, नर्मदा घाटी परियोजना और अन्य बांध परियोजनाओं ने हजारों आदिवासियों को विस्थापित किया और उनके पर्यावरण को नष्ट कर दिया। जलवायु परिवर्तन, जो भूमंडलीकरण का एक परिणाम है, ने भी आदिवासी समुदायों को प्रभावित किया है। अनियमित वर्षा, सूखा और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएँ उनकी कृषि और आजीविका को प्रभावित कर रही हैं। इसके बावजूद, आदिवासी समुदायों की पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ, जैसे जैविक खेती और वन संरक्षण की तकनीकें, पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

आदिवासी जीवन का यथार्थ और चुनौतियाँ

भूमंडलीकरण के दौर में आदिवासी जीवन का यथार्थ जटिल और बहुआयामी है। एक ओर, यह प्रक्रिया उन्हें वैश्विक समाज से जोड़ रही है, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर प्रदान कर रही है। दूसरी ओर, यह उनकी सांस्कृतिक पहचान, पारंपरिक आजीविका और पर्यावरण को खतरे में डाल रही है। आदिवासियों को मुख्यधारा के समाज में शामिल करने की प्रक्रिया में उनकी विशिष्टता को नजरअंदाज किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी पहचान और स्वायत्तता पर संकट मंडरा रहा है। इसके अतिरिक्त, भूमंडलीकरण ने आदिवासियों के अधिकारों और संसाधनों पर उनके नियंत्रण को कमजोर किया है। उनकी जमीनों और वनों पर बढ़ते कॉरपोरेट हितों ने उन्हें हाशिए पर धकेल दिया है। कई मामलों में, आदिवासियों को उनकी जमीनों से बेदखल किया गया है बिना उचित मुआवजे या पुनर्वास के। यह स्थिति उनके आर्थिक और सामाजिक शोषण को और बढ़ा रही है।

समाधान और भविष्य की दिशा

आदिवासी जीवन को भूमंडलीकरण के नकारात्मक प्रभावों से बचाने के लिए समग्र और संवेदनशील दृष्टिकोण की आवश्यकता है। कुछ संभावित समाधान निम्नलिखित हैं:

सांस्कृतिक संरक्षण: आदिवासी भाषाओं, कला और परंपराओं को संरक्षित करने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। स्कूलों में

आदिवासी भाषाओं को शामिल करना और उनकी सांस्कृतिक विरासत को प्रोत्साहित करना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

आर्थिक सशक्तिकरण: आदिवासियों को उनके वन उत्पादों और हस्तशिल्प के लिए उचित बाजार मूल्य सुनिश्चित करना चाहिए। सहकारी समितियों और डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से उनकी कला और उत्पादों को वैश्विक बाजार तक पहुँचाया जा सकता है।

पर्यावरण संरक्षण: आदिवासी क्षेत्रों में पर्यावरणीय संरक्षण के लिए उनकी पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को शामिल करना चाहिए। उनकी भागीदारी के बिना कोई भी विकास परियोजना शुरू नहीं की जानी चाहिए।

कानूनी और नीतिगत समर्थन: पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों का विस्तार) अधिनियम (PESA) और वन अधिकार अधिनियम (FRA) जैसे कानूनों को प्रभावी ढंग से लागू करना चाहिए ताकि आदिवासियों के अधिकारों की रक्षा हो सके।

निष्कर्ष

भूमंडलीकरण ने आदिवासी जीवन को एक दुधारी तलवार की तरह प्रभावित किया है। यह एक ओर उन्हें वैश्विक अवसरों से जोड़ रहा है, वहीं दूसरी ओर उनकी सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय नींव को कमजोर कर रहा है। आदिवासी जीवन का यथार्थ यह है कि वे अपनी पहचान और अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। उनकी संस्कृति, परंपराएँ और प्रकृति के साथ उनका गहरा जुड़ाव विश्व के लिए एक अनमोल धरोहर है, जिसे संरक्षित करने की आवश्यकता है। भूमंडलीकरण के इस दौर में, आदिवासियों को न केवल मुख्यधारा में शामिल करना होगा, बल्कि उनकी विशिष्टता और अधिकारों का सम्मान भी करना होगा। केवल एक समावेशी और संवेदनशील दृष्टिकोण ही यह सुनिश्चित कर सकता है कि आदिवासी समुदाय इस वैश्विक परिवर्तन के दौर में अपनी पहचान और गरिमा के साथ जीवित रहें।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. कंडुलना, अजय. आदिवासी अस्मिता और संघर्ष. नई दिल्ली: प्रकाशक।
2. मीणा, गंगा सहाय. आदिवासी चिंतन की भूमिका. जयपुर: प्रकाशक।
3. गुप्ता, रमणिका. आदिवासी समाज और साहित्य. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. रेनू. भूमण्डलीकरण, साहित्य, समाज और संस्कृति. नई दिल्ली: अकादमिक पब्लिकेशन।
5. पंकज, अयोध्या. भारतीय लोकतंत्र में आदिवासी नेतृत्व की भूमिका. नई दिल्ली: प्रकाशक।
6. आदिवासी दर्शन. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
7. तिर्की, वंदना. आदिवासी विमर्श: अस्मिता और संघर्ष. रांची: झारखण्ड साहित्य अकादमी।
8. सोरेन, निर्मल. आदिवासी जीवन और वैश्वीकरण. कोलकाता: प्रकाशक।